PAGE(S) MISSING
NOT AVAILABLE

FOLIO NO:
1

वर्तीदानक्षेत्रशशिसुतोमुख्योत्रसंख्यावशी ५५ इतिबुधः जीवात्कुंठेलघुमदोनयेकुजात्यन्नवसादनपे आदित्यात्पुरलोभसंदोधनपे चंद्राद्रेमो
साधके सोम्यात्पोरवैशेतधानकेशनगोमांचिरभागवात्श्रीमतोधनिकेसनोःपुरवैशसंधनोयसमः ५६ इतिगुरु शुक्रःस्यात्पुरगर्भे
मोहधनिकःसोम्यात्रगुणेधिकोलग्नात्कंठेलघुमेहाधिपगुरोमोहीधनोयाविधोः यान्नागैर्वमदाधिकोरविजात्गर्वमदाधनकोभो
माहोमतधीकृगदिनकरादिकेपोरसंख्यारमाः ५३ इतिशुक्रः मंदाज्ज्ञेशिचयोगुरोमतिकरः शुक्रात्तयाश्रीकुजाहोमगीज्ञपुरावुधात्
तदधनीपात्रविधोडितेकृते लग्नयोगविज्ञतानपादिनमणेःपान्नवसोज्ञानकोमंदस्यात्रसुखंवदंतिमुनयःसंख्याधिगाकथ्यते इतिशनिः
अथलग्नाष्टकवर्गवाक्यानि सूर्यशनिगुरुशुक्रभौमबुधचंद्रलग्नक्रमेण अथाक्रमां गोविंतीनपरयोगवेत्तानस्यात् कुरुवंशेषुसंध
नोय कोरागोवोमंदधीस्यात् कोलेलकोनित्यःकुरवश्चटनाद्योः गीतज्ञोयं गीतज्ञोयं इतिलग्नाष्टकवर्गवाक्यानि अथपवनाचार्योक्ति
अष्टवर्गः यद्यथोद्धेःकृतंशास्त्रमष्टवर्गाख्यंबुधैः परंविध्वस्तसंमोहानजायंतेहितेषुच १ विशेषभावस्त्रादोमोहस्तेषांप्रजायते अतो
हममलैर्हृत्तैःसारात्सारतरंबुधि २ कलधौतशलर्कांहिगृहीत्वास्थिरमानसः भूर्यरेखात्रयंकृत्वातासांभेदंतथापुनः ३ तत्रचक्रेग्रहा
स्थाप्ययथास्थानंतुगोलवित् स्वस्थानात्सर्वसयुक्तोरेखाविंदून्प्रदापयेत् ४ अथरेखास्थापनांकालिख्यतेकाणीगांधड० चछजझञंएकादि

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

संख्यया टठडढणनयदधनाश्चैकादिसंख्यया ५ पफबभमएतेनुचंद्राद्द्वित्रिचतुःशख्यः परलवशषसहएकादिक्रमतोज्ञमी ६ दशमांके पितस्याग्नेवर्णश्चैकादिसंख्यया ७ अथरेखा पुरवासोहिथनिकःखमार्कःप्रकीर्तितः इदोगतिनयोभौमात्कारावत्साहिधेनुकः १ गमंतो धनपात्रंज्ञात्शेषेधन्यःसुतार्चितात् नधाश्रीशुक्रजोमंदात्पुरवासोधेनुकः २ गर्भास्तानपरोलग्नात्सूर्यस्वाष्टकवर्गके इतिरेवरष्टकवर्गः पंडि तःसुनयश्चंद्रात्चंद्रःस्वाष्टकवर्गके श्रीगुणेचधनीयाचैकुजाच्चंद्रःशुभप्रदः ३ योगीवंशीमुजनस्यबुधाच्छुभफलप्रदः पुरवसदनस्याहिगु रोश्चंद्रसुखार्थदः ४ गर्भोमासोधनीत्याच्चशुक्राच्चंद्रःप्रकीर्तितः गुणेतुष्टःशनेसोख्यगीतकेज्ञेयंचलग्नतः इतिचंद्राष्टकवर्गः भौमःशुभ प्रदःसूर्यात्गुणीतनयसंस्थितः चंद्राद्दनेयंस्याद्भौमःपात्रवत्सदनापंच १५ गोत्रातंस्याद्बुधाद्भौमोतनयश्रीगुरोःशुभः तेजःपरंभृगोः सौरेःकविसादाधनीपच कालस्कानित्योलग्नात्स्याद्भौमस्थानाच्छुभप्रदः इतिभौमाष्टकवर्गः बुधःशास्त्रधीपरोर्कात्चंद्राद्वितदानयः पुर वासोदाधिर्नित्यबुधोभौमात्गुरुवद्दः १७ योगोमनंथनंपात्रंबुधश्चोदपरंगुरोः पुत्रगर्भमहाधन्यःसौम्यःशुक्राच्छुभप्रदः १८ पुरवासोहिथ निकःसूर्यपुत्राच्छुभप्रदः कुरवश्चंद्रनाऱ्योपिबुधोलग्नाच्छुभावहः इतिबुधः यात्रालाभःसदाधेनुकःप्रोक्तोरवितोगुरुः ग्रामःसुधियाः

रात्न २

शशिनःशुभःसुरगुरुस्मृतःकंठवासोजनकश्चद्वोणीपुत्राच्छुभप्रदः परवासेमबुधानीकःपुत्रगर्भसदानकः २१ श्रीमोक्षधनिकःशुक्राद्वाणत शीशनेर्गुरुः कुरवेशंबुसाधूनांपश्चाच्चिलग्नतःशुभः २२ इतिगुरुरष्टकवर्गः दयाश्रीसूर्यतःशुक्रःशुभरेखाप्रदःस्मृतः पात्रंगावोमंदध न्योत्रापिचंद्रात्स्मितःशुभः २३ गणतोधूपवस्त्रकुलजाद्गुणतोधान्यरंदुजात्गुरोर्महाधनाच्छुभःपारगोभूमोहिथानिकः २४ स्याज्ञोवोमंदध न्यायःशनेःशुक्रःशुभस्मृतः कारुवोमंदधीगास्याल्लग्नाच्छुक्रःशुभावहः २५ इतिशुक्राष्टकवर्गः कुरवःसदानयेर्कात्शनिःप्रोक्तःशुभाव ह लग्नेयंचंद्रतोलग्नात्स्मितनयोन्नकुजाच्छुभः २६ बुधात्तेजोधनंपात्रंगोगीतकरःशुभः तथाश्रीःशुक्रतःस्वर्णात्गुणीतुल्यःशनिःस्मृतः २७ योगवेत्तानयोलग्नात्शुभप्राप्तेशनिर्भवेत् इतिशनेरष्टकवर्गः गोर्वितानयांसूर्याद् गीतज्ञोयंचचंद्रतः कालस्कानित्याःकुजतोज्ञा लुरावीचर्दानयः कुरुवंशेषुसधनायेज्यालग्नंतुसूर्यजात् योगवेत्तानयःशुक्रात्कारुर्गावोमंदोधयः गीतज्ञोपानिजाल्लग्नंशुभरेखाफ लप्रदं इतिलग्नाष्टकवर्गः अथरेखायोगः सर्वेषांग्रंथांतरात् देवा ४८ धवो ४९ धिगो ३९ विल्क ५४ श्वेशो ५९ रामो ५२ धिगो ३९ धवः ४९ इत्यष्टकवर्गसारेतुविष्ठनाथैकविरिते अष्टवर्गोदयाख्योयंवर्गःआधोगतःस्फुटः इत्यष्टकवर्गजातके प्रथमोध्यायः ७

अथ रवेरष्टकवर्गः रेखांकाः ४८

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ५ | ६ | ३ | ४ |
| ३ | ५ | ६ | ८ | ६ | ११ | ५ | ६ |
| ११ | ८ | १० | १० | ११ | १२ | ९ | ९ |
| १२ | ० | ११ | १२ | ० | ० | ० | ११ |

अथ चंद्राष्टकवर्गः रेखांकाः ४९

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| १ | १ | ३ | ३ | ३ | ५ | ५ | ६ |
| ३ | ६ | ५ | ५ | ६ | ६ | ६ | ८ |
| ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

अथ भौमाष्टकवर्गः रेखांकाः ३९

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | १ | ३ | ६ | १ | १ | ७ |
| ६ | ६ | ३ | ५ | ११ | ५ | ६ | ९ |
| ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | ११ | ११ | ११ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ६ | ६ | ६ | ८ | ८ | ८ | ९ |
| ६ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ११ |
| ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

बुधाष्टक ५४

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ६ | ६ | ८ | ८ | ८ | ९ |
| ६ | ८ | ८ | ८ | ९ | ९ | ९ | ११ |
| ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

गुर्वष्टक ५६

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ | ८ |
| ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ | ९ |
| ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० | ० |

शुक्राष्टक ५२

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ३ | ५ | ६ | ३ | ४ |
| ३ | ५ | ६ | ८ | ६ | ११ | ५ | ६ |
| ११ | ८ | १० | १० | ११ | १२ | ९ | ९ |
| १२ | ० | ११ | १२ | ० | ० | ० | ११ |

अथ शनेरष्टवर्गः २८

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ३ | ३ | ३ | ६ | ५ | ६ | ३ | ३ |
| ६ | ६ | ६ | ८ | ६ | ११ | ५ | ६ |
| १० | ० | १० | १० | १२ | १२ | ९ | ९ |
| ११ | ० | १२ | १२ | ० | ० | ० | ११ |

अथ लग्नाष्टवर्गः ४७

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ३ | २ | २ | ० | ५ | ४ | ४ |
| ६ | ६ | ६ | ५ | ५ | ६ | ५ | ६ |
| १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० |
| १२ | ० | ० | १ | ५ | ६ | ० | ० |

अथ मेषादीनां राशीनामेकानेकन्यासः

| मे | वृ | मि | क | सिं | क | तु | वृ | ध | म | कु | मी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ७ | १० | ८ | ४ | १० | ५ | ७ | ८ | ९ | ५ | ११ | १२ |

अथ रव्यादीनां ग्रहाणामेकानेकन्यासः

| सू | चं | मं | बु | व | शु | श |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ५ | ८ | ५ | १० | ७ | ५ |

अथराशिग्रहगुणकाःगोसिंहौदशगुरिगतोवसुभिः ८ मिथुनालिनौ वणिङ्नेषोनमुनिभिः ७ कन्यकामकरौशरैः ५ शेषास्वमानगुणिताराशिमानङ्
मेक्रमात् जीवारभृकसोमपानांदशवसुनीद्रियैः क्रमाद्गुणकाः बुधसंख्याशेखाणांराशिग्रहगुणांकाःएथक्क्रमात्ज्ञेयाः श्रीवोजयतु नंदिद्वारपुरेव
भूवमहितोयंकानजीदेशयलत्सुनुशिवदासकमश्चनिरतोहानेहिजेशार्चने तज्जःशंभुनृपः सहास्यनवत्यैनोविद्विज्ञानांदत्वादानेकर्णइवापरोविज
येतकोतःप्रतापाधिकाः १ श्रीसर्वभौमन्नपलब्धपट्टसुधीरःश्रीशंभुदासन्नृपतिःशिवनिष्ठचित्तः संगीतनर्त्तनकवित्वविनोदहास्यशास्त्रेषुहर्षितमतिः
सुतदामुताह २ अस्यजन्मसमयोन्नलिख्यतेत्यश्वर्गफलसिद्धिहेतवेशालिवाहनशकेन्नवेगतेवेदकुंजरशरेंदुसंमिते ३ १५ ५४ विक्रमस्यनवभूय
नोन्मिते १७ पटेवत्सरेचशुभकृत्यथैदवे शुक्रमासिवदुलेचपक्षकेमीनकेतनतिथौबुधेहनि ४ नहिनेत्रघटी १६ मिता १६ तिथिर्वह्निभंमन्युघ
टी १४ तदा नाडिकाक्षति २२ समोधृतियोगो २२ वेणुजंकरणमष्टनाडिकं ५ षड्भिन्नासुघटीकास्तिनोदयात् ६ नूदंव ९ भ्रमितपलेषुवेतदास
नृपतेःसमुद्भवोनिश्चितस्कगणैकरिहास्थितेः ६ द्वौयुगानिवसुवाहवश्चखेमादिकास्तराशित्रनिश्चितः भूर्गजाश्वतिथयोविधुःकुजःसाग
गश्वमुनयोद्रियविकाः ७ द्वौनगाश्वयमलाविधूद्भवःषड्गुणाःकुशशिनःसुरार्चितः संनखाश्वतिथयःसितःशनिःसप्तखशाःकरामिनाःषड्
ब्धयः ८ पंचपंचरसवायवस्तमोवह्नयश्चवसवः शराब्धयः जन्मलग्नमिहराशिपूर्वकंशंभुदासन्नृपतेः शुभप्रदं ९ दिनार्द्धमिष्टघटिका १६



समप्तत्रिंशत् ३७ पलानिच नागाब्धित्रीषुवसवोर्कतास्त्रीशाः क्रमाद्वेः गतयोब्धावसुगुणपंचरामाशिवोन्मिता देवज्येशनिराहूणांविलोमगतयस्त्वि
ह १९ श्रीवरदमूर्निर्जयतु श्रीसंवत् १७ १९ वर्षेशके १५ ८५ प्रवर्त्तमानेऽस्मिन्मासेऽसितपक्षे १३ बुधेघटी १६ पल १९ धृतिकानक्षत्रेघटी
१३ पल ४१ धृतियोगेघटि २१ पल ५५ वणिजकरणेएवंपंचांगशुद्धावन्हिनेश्रीमत्सूर्योदयात्गतघटी ६ पल १९ समयेसकलगुणीलं
क्षतश्रीशंभुदासभूपालस्यजन्मसमयः लग्नस्यवर्त्तमाने ६ ४ ८ रूपात्मके क्षतिरवेरष्टकवर्गलेखनक्रमः एवंचंद्रादिनांलग्नातानां

मध्यमाः

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | ५ | २ | ६ | ९ | ७ | ६ | |
| ३ | ६ | १६ | ९ | ३७ | ७ | १२ | २६ | |
| ५७ | ३४ | १४ | ५५ | १५ | २१ | २१ | २६ | |
| ४२ | १४ | ३२ | ० | ० | ० | ० | ४ | |
| ५९ | ७१ | ३१ | २५५ | ५ | ९६ | २ | ३ | |
| ८ | ३५ | २६ | ३२ | ० | ८ | ∴ | २१ | |

स्पष्टः

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | के | ल | घ | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २ | १ | ४ | ३ | ६ | ० | ७ | ५ | ११ | ३ | १६ | १३ |
| ४ | ८ | ७ | ७ | १६ | २० | ११ | ५ | ५ | ८ | ३७ | २३ |
| २८ | १५ | २ | २ | ११ | १५ | ४६ | ५५ | ५५ | ५५ | नत | ३ |
| १ | ७ | १ | १ | १ | १ | १ | २ | ४४ | १ | २० | १८ |
| ५६ | ८५३ | ३२ | २१३ | | ३७ | ४ | ३ | ३ | | १८ | ४२ |
| ५६ | ३५ | २६ | ३८ | | ३४ | ३२ | २१ | २१ | | | |

होo प्रo
५

| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १ | १२ | |
| | ७ | ५ | ८ | ५ | ७ | ८ | ७ | ५ | ५ | ७ | |
| ५ | २ | १२ | ३६ | २९ | २ | ५५ | ३ | १९ | २९ | २ | |
| | | | | | | | | | | | |
| ३ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | १ |
| २३ | २२ | २१ | १९ | १८ | २१ | २२ | २३ | २१ | १८ | १९ | २१ |
| ५३ | ५३ | १० | ३७ | ३७ | १० | ५३ | ५३ | १० | ३७ | ३७ | २० |
| ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | २१ |

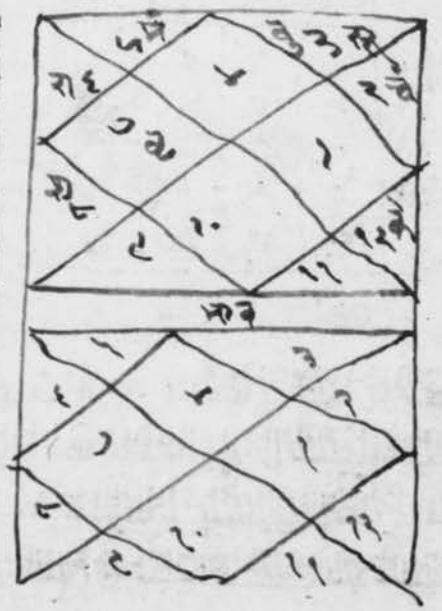

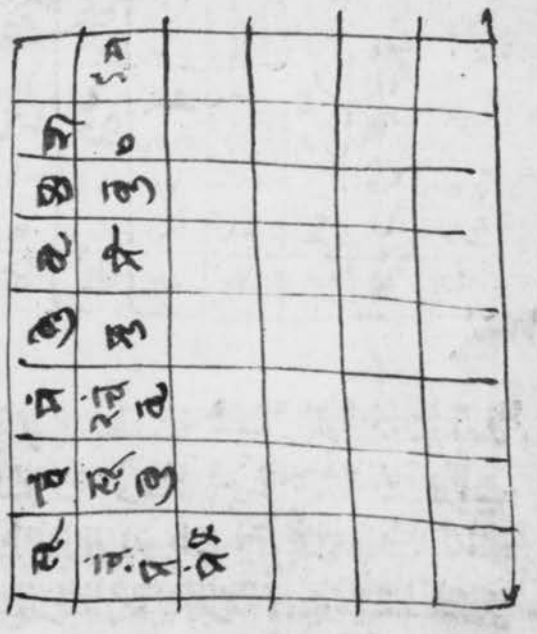

राम
५

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | |

रवेरष्टकवर्गः शुक्रपिंडः १२८५४० कोला १६८

| ३ रवि | ४ मं | ५ बुं | ६ | ७ गु | ८ शु | ९ | १० | ११ | १२ | १३ लग्न | १४ चं |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५ | ३ | ४ | ५ | ४ | ३ | ३ | २ | ६ | ६ | ४ | ४ |
| १ | ० | १ | ४ | - | - | ० | ० | २ | ३ | १ | ३ |
| १ | ० | १ | ३ | ० | ० | ० | ० | २ | ३ | १ | ३ |

गुरुचंद्राष्टकवर्गः रा.पि.५३७५४ को.पि.२७

| रवे | ३ शु | ४ मं | ५ बुं | ६ | ७ गु | ८ शु | ९ | १० | ११ | १२ | १३ लग्न |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ४ | ३ | ० | ४ | ४ | ५ | ३ | ५ | ६ | २ | ४ | ६ |
| ० | २ | ० | ० | ० | ३ | ० | २ | २ | ० | २ | २ |
| ० | २ | ० | ० | ० | ३ | ० | २ | २ | ० | २ | २ |

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ೫ | ೬ | ೮ | ೭ | ೧೦ | ೧೧ | ೧೨ | ೧೩ | ೧೪ | ೧೫ | ೧೬ |
| ೫ | ೫ | ೩ | ೫ | ೫ | ೦ | ೫ | ೫ | ೩ | ೦ | ೦ |
| ೫ | ೫ | ೨ | ೧ | ೦ | ೦ | ೨ | ೨ | ೨ | ೦ | ೦ |
| ೫ | ೫ | ೧ | ೦ | ೦ | ೦ | ೧ | ೨ | ೨ | ೦ | ೦ |
| ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ |
| ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ |

೨ಥಯಸ್ತಂಭದಲ್ಲಿರುವ ೫೩೬೯೫೬೩೨೦ ಕಿಂ ಲ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ೬ | ೭ | ೮ | ೧೦ | ೧೧ | ೧೨ | ೧೩ | ೧೪ | ೧೫ | ೧೬ | ೧೭ |
| ೫ | ೫ | ೫ | ೩ | ೫ | ೫ | ೩ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ |
| ೫ | ೫ | ೫ | ೨ | ೧ | ೦ | ೨ | ೨ | ೨ | ೦ | ೦ |
| ೫ | ೫ | ೫ | ೧ | ೦ | ೦ | ೧ | ೨ | ೨ | ೦ | ೦ |
| ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ |
| ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ | ೦ |

೨ಥಯಸ್ತಂಭದಲ್ಲಿರುವ ೫೩೬೯೫೬೩೨೦ ಕಿಂ ಲ

| | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ೬ | ೭ | ೮ | ೯ | ೧೦ | ೧೧ | ೧೨ | ೧೩ | ೧೪ | ೧೫ | ೧೬ |
| ೫ | ೫ | ೫ | ೫ | ೩ | ೫ | ೫ | ೩ | ೦ | ೦ | ೦ |
| ೫ | ೫ | ೫ | ೫ | ೨ | ೧ | ೦ | ೨ | ೨ | ೨ | ೦ |
| ೫ | ೫ | ೫ | ೫ | ೧ | ೦ | ೦ | ೧ | ೨ | ೨

DR. BHAU DAJI
MEMORIAL

मष्टकवर्गक्रमोलेख्यः उक्तश्चचतुर्दशोर्गारेरवातथैकादशतिर्यगाः जायंतेकोष्टकास्तत्रशतैकंत्रिंशताधिकं १ खेषुखष्टकवर्गेषुग्रहाणां चष्टथक्पृथक् दशद्वादशसंछिन्नायोजयेत्तत्रतत्रभे २ रव्यादीनांफलंज्ञात्वानिर्दिशेच्चपृथक्पृथक् दशम्यांशून्यभागेचशत्रुनी चगृहेषुच ४ व्याध्यर्थदुःखनाशादीन्लभतेनात्रसंशयः एक १ द्वि २ त्रि ३ फलेयस्मिन्धनधान्यपरिक्षयः ५ चत्वारिमध्यमा निप्युर्दशातत्रैवमध्यम पंचमादिगुरगोपेतामहमंसर्वसिद्धिदं ६ सर्वग्रहाणांरेखैकंकुर्यादिष्टदिनेततः अष्टाविंशफलंमध्यमधि कोनेशुभाशुभं इतिरेखाष्टकवर्गः तथाचदिनफलंज्ञातकामरणे ३ इत्येकरेवटस्यचसंप्रदिष्टारेखायुतिश्चाखिलरेवटरेखा अष्टहिसंख्याक्त समस्ततोपियथाधिकोसदसत्फलाय १ तत्रत्रिकोणशोधनादौमतङ्गतश्लोकाः यत्त्रिकोणभवनेषुचाल्पकंतत्समंत्रिषु विशोधयेत्फलं २ एक मेचगंगभयदातदातत्रिकोणमपिनैवशोधयेत् २ चेत्समत्वमतिलेषुतेषुवैतदासर्वमेवमतिमान्विशोधयेत् एवमत्रमुधियात्रिकोणकं विशोध्यविधिनायथोदितं २ एकाधिपत्यत्वमतोविशोध्यसेत्रद्वयस्यैवफलानिसम्यक् ग्रहेणयुक्तेफलहानिकेचफलाधिकेरेवटविवर्जितेच ३ अन्यत्रहीनेनफलेनतन्नंविशोधयेत्वटविवर्जितेतु फलाधिकेरेवटसमन्वितेचेदन्यत्रसर्वफलमुत्सृजेतत् ४ यदोभयेरेवटकंयुते भवेतां नशोधयेत्तत्रफलंतदानीं फलस्यसाम्येप्यभयेग्रहाभ्यांविवर्जितेचेदखिलंत्यजेतत् ५ ग्रहान्वितेरेवटविवर्जितेवाशून्येयदैकत्रय

शाथास्थितंतत् कुलीरकंठीरवयोस्कराश्योः म्हेत्रेष्टथक्कृतत्रेष्टथक्फलेच ६ शोध्यावशिष्टंखलुतत्राशोसंस्थापनीयंतुफलंतथैव त्रिकोणस्यविधिर्विधेयपश्चात्तथैकाधिपतित्वमत्र ७ अथत्रिकोणशोधनेकाधिपत्यशोधनं ब्रह्मयामले राशिचक्रंयथामार्गंनिक्षिप्यादृग्ग्रहस्यच त्रिकोणशोधनंकुर्यादादौसर्वेषुराशिषु १ त्रिकोणंतुकर्कोमेषसिंहधनुःक्रमात् वृषकन्यामृगास्थेषुतुलाकुंभयमेषुच २ कर्कवृश्चिकमीनास्तेत्रिकोणास्युःपरस्परं त्रिकोणेषुचयन्स्वंतुल्यंत्रिषुशोधयेत् ३ एकस्मिन्भवनेशून्येतत्त्रिकोणंनशोधयेत् समस्तेसर्वगेहेषुसर्वंसंशोधयेद्बुधिमान् ४ एवंत्रिकोणंसंशोध्यपश्चादेकाधिपत्यतः क्षेत्रद्वयफलानिस्युस्तदासंशोधयेद्बुधः ५ हीनेनसहचान्यस्मिन्शोधयेन्नग्रहवर्जिते ग्रहयुक्तेफलेहीनेग्रहाभावेफलाधिके ६ ऊनेनसहन्यान्यस्मिन्शोधयेन्नग्रहवर्जिते फलाधिकेग्रहेयुक्तेचान्यस्मिन्सर्वमुत्सृजेत् ७ उभयोर्ग्रहसंयुक्तेनसंशोध्यःकदाचन उभयोर्ग्रहहीनाभ्यांसमक्षेसकलंत्यजेत् ८ सग्रहाग्रहतुल्यत्वात्सर्वंसंशोधयव्यग्रहात् कुलीरसिंहयोराश्योःएथक्क्षेत्रेएथक्फलं ९ शोध्यावशेषंसंस्थाप्यराशिमानेनवर्द्धयेत् ग्रहयुक्तेपितद्रासोग्रहमानेनवर्धयेत् १० गोसिंहोदशगुणितो १० वसुभि ८ र्मिथुनालिनो वणिक्मेषोतुमुनिभिः कन्याबीमकरौ शरैः ५ शेषाःस्वमामगुणितारााशिमानाद्रमैक्रमात् जीवारशुक्रसोम्यानांदशवसु ८ मुनींदिये ५ क्रमात्गुणकाः बुधसंख्याशेषाणांराशि

राम
८

ग्रहगुणैर्गुणयेत्पृथक् १२ राशिग्रहगुणकारैःफलानिगुणयेत्पृथक् ग्रहयुक्तेस्यात्गुणयेत्ग्रहसंख्यागुणेतथा १३ एवंगुणित्वासंयोज्यासप्तभि ७ गुणयेत्पुनःसप्तविंशोद्धृतान्नक्षत्रवर्षाण्यत्रभवंतिहि १४ द्वादशादिगुणैर्लब्धंमासाहर्यृक्षाःस्मृताः सप्तविंशतिवर्षाणिमंडलंपरिकीर्तितं १५ तंदृङ्भूमिभिः ५४ शोध्यंत्यजेद्भूमी ५४ तदृङ्के।कुजाधिके २१ भवेद्यत्रमंडला १०८ शोधयेत्पुनः १६ अन्योन्यादृङ्हरणंग्रहयुक्तेनुकारयेत् नीचेर्दृमत्तगेप्यदृङ्हरणंतेषुकारयेत् १७ शत्रुक्षेत्रेत्रिभागोनंदृग्भागहरणंतथा रणभंगंतुत्रंशोनमर्कदृङ्योगाद्राहुनसंश्रयात् १८ वह्निलहरणेप्राप्तेकारयेद्दलवत्तरं १९ पश्चात्तान्सकलान्कृत्वावरर्गेनविवर्धनं ३३४ मातंग ३६५ लब्धंशुद्धायुर्भवतीतिनसंशयः सर्ववह्निनमासाद्यैःकृत्वातस्यदशाभवेत् २० सवंग्रहणांसर्वेषांदशांकुर्यात्पृथक्पृथक् अथवर्गदशामार्गःसर्वेषामुत्तमोत्तमः २१ केंद्रादन्यतरस्थेचशशिनिग्रहसंयुते अष्टवर्गेणभिन्नायुःकुर्यात्तस्यप्रयत्नतः २२ दशमस्थेःक्रूरसौम्ययुतेभिन्नाष्टकवर्गायुप्रयोगः इतिभिन्नाष्टकवर्गायुर्द्वितीयोध्यायः अथसमुदायाष्टकवर्गायुः अष्टवर्गसमुत्थगृह्याणांराशिमंडले एकस्मिन्मंडलाधिकेशोधयेच्चक्रमंडलं १ द्वादशादीनुगृह्णीयादेवंसर्वेषुराशिषु प्रागुक्तित्रिकोणंशोधयेत्पश्चादेकाधिपत्यतः २ पूर्वोक्तगुणकारैश्चवर्द्धयेच्चपृथक्पृथक् एकीकृत्यनुतत्सर्वंसप्तभि ७ र्गुणयेत्पुनः ३ सप्तविंशतिभिर्लब्धमायुर्पिंडंप्रदृश्यते द्वाद

शाहिगुणैर्लब्धा १२ ३० ६० मासाहर्यटिकाः स्मृताः ४ शतादूर्ध्वंतुनाधिंडमंडलं १०० शोधयेत्ततः शतमेकंतुगृह्णीयादीर्घायुर्योगसंभवं ५ तद्विधंसकलंकृत्वावारांकेन १२४ विवर्द्धितं मातंग ३६५ हृतशुद्धायुः सामुदायंचदृश्यते ६ सर्वग्रहेभ्यः शुद्धोयंपिंडरूपंविनिर्दिशेत् ग्रहाणांतुविभागार्थमुपायः कथ्यतेधुना ७ भिन्नाष्टवर्गजापुथक्स्वस्वखेटस्यसंगुणः सामुदायेनाभिन्नायुर्योगात्तत्स्वदशाभवेत् ८ एवंग्रहाणांसर्वेषांदशायुष्पृथक्पृथक् समुदायदशामार्गंत्यक्त्वंकर्मसमीरितं अष्टवर्गदशामार्गः सर्वेषामुत्तमोत्तमः ग्रहसहितेकेंद्रस्थेचंद्रेकेंद्राद्गृहस्थितैः शेषैः समुदायाष्टकवर्गविधिनाग्रहदायंचिंतयेन्मणित्योक्तिः १० इतिसमुदायाष्टकवर्गायुः अथ भिन्नाष्टकवर्गायुरिलग्नायुःस्पष्टीकरणं राशितुल्यानिवर्षाणिप्रपद्यंतुदयस्यच शेषान्मासदिनार्थंचलग्नादायुर्विनिर्दिशेत् १ अथायुःव्यवस्था नकेंद्रगेंदोर्बलसंयुतेन्यैः संकटकस्थैरधियोगयुक्तैः भिन्नाष्टवर्गेणदशायुषस्यादतोन्यथाचेत्समुदायकोपे २ केंद्रादन्यतरस्थेचशशिनिग्रहसंयुते अष्टवर्गेणभिन्नायुर्दशमेक्रूरसौम्यकैः ३ इतिभिन्नायुःव्यवस्था ग्रहान्वितेशीतकरेसकेंद्रे यद्यन्यदेर्वाबलैरकेंद्रैः हृतः खगेस्तत्तत्समुदायमार्गं विनिर्दिशेज्ज्ञातकौशलज्ञः ४ ग्रहसहितेकेंद्रस्थेचंद्रेकेंद्राद्गृहस्थितैः शेषैः समुदायाष्टकवर्गविधिनाग्रहदायंचिंतयेन्मणित्योक्तिः ५ इतिसमुदायुः व्यवस्था अल्पायुर्योगजातोवादीर्घायुर्योगतो



पिवा उभयोर्दशाविभागैरायुर्ज्ञानंनशक्यते ६ षष्ठाष्टमगतैःपापैरल्पायुरादिशेत्ततः सौम्यैर्विपरीतेस्यान्मिश्रगतैश्चमिश्रमादिशेत् ७ इत्यष्टवर्गेतरीयोध्यायः अथोदाहरणंलिख्यते तत्रत्रिकोणशोधनप्रकारः त्रिकोणेषुचयन्त्स्वनंततुल्यंत्रिषुशोधयेदिति त्रिकोणत्रयस्थानेषुयत्स्वनंफलंतत्स्थानंत्रयेषुशोध्यंतद्यथा स्त्र्यष्टकवर्गमेषाधोरेखाधोरेखाफलं ४ सिंहाधःफलं ४ धनाधःफलं ३ एतत्स्वनंफलंत्रिषुशोधितेजातंधनाधः मेषाधः १ सिंहाधः १ तथाष्टधाधः ४ कन्याधः ५ मकराधः १ इदंत्रिषुशोधितेमकराधः ० वृषाधः ३ कन्याधः ४ तथाकुंभाधः ६ मिथुनाधः ५ तुलाधः ४ इतित्रिषुशोधितेतुलाध २० मीनाधः १ कुंभाधः २ तथामीनाधः ६ कर्कधः ३ वृश्चिकाधः ३ इदंत्रिषुशोधितेकर्काधः वृश्चिकाधः मीनाधः २ इत्येकप्रकारः एकस्मिन्भवनेशून्येतत्रिकोणंनशोधयेदिति त्रिषुत्रिषुकोणपूरणकस्थानेशून्यंभवतितदात्रिकोणशोधनंतत्रनकार्यं त्रिषुस्थानेषुयथास्थितरेखाफलं पाप्यं तद्यथा भौमाष्टकवर्गेवृषाधोरेखाफलं ३ कन्याधः ५ मकराधः ० अत्र शोधनंनकार्यं तेनवृषाधः ३ कन्याधः ५ मकराधः यथास्थितमेवस्थाप्यं तथाबुधाष्टकवर्गेवृषाधःफलं ७ कन्याधः ३ मकराधः ० अत्राधेकत्रशून्यत्वात्त्रिकोणशोधनाभावः तेनवृषाधः ७ कन्याधः ३ मकराधः ० त्रिषुस्थानेषुयथास्थितंस्थापितंतत्बुधाष्टवर्गेवृषार्यं भौमाष्टवर्गेपि इतीदृतीयःप्रकारः समस्तेसर्वगेहेषुसर्वसंशोध्यबुद्धिमान् इति त्रिषुकोणेषुफलंसमानंभवतितदास्थानत्रयेषुसर्वंशोधयेदित्यर्थात्त्रिषुशू

न्यमेवस्थाप्यं तद्यथा गुरोरष्टकवर्गेतुलाधःफलं ४ कुंभाधः ४ मिथुनाधः ४ अत्रफलसाम्यात्त्रिषूत्क्रंस्थापितंतुलाधः कुंभाधःमिथुनाधं तथालग्नाष्टवर्गेकन्याधः ४ मकराधः ४ वृषाधः ४ अत्रापिस्थानत्रयेषूत्क्रंस्थापितंकन्याधः°मकराधः° वृषाधः° गुरोरष्टकवर्गे तथालग्नाष्टवर्गेस्थापितंततदृष्टव्यं संम्यक् इतितृतीयप्रकारः अथकेषांचिन्मतंमहा त्रिकोणेषुचयतत्सूनंतुल्यंत्रिषुशोधयेतइतित्रिकोनेषुस्थानत्रयेषुयत्सूनंफलंततस्थाप्यं तद्यथा रवेरष्टकवर्गेमेषाधःफलं ४ सिंहाधः ४ धनाधः ३३ इदंत्सूनंस्थानत्रयेस्थाप्यं ३ मेषाधः ३ सिंहाधः ३ धनाधः ३ तथावृषाधः ४ कन्याधः ५ मकराध १ एतत्सूनं १ स्थानत्रयेस्थाप्यं वृषाधः १ कन्याधः १ मकराधः १ तथाकुंभाधः ६ मिथुनाध ५ तुलाधः ४ एतत्स्थानत्रयेषूत्क्रंसूनं ४ स्थाप्यंकुंभाध ४ मिथुनाधः ४ तुलाध४ ४ तथामीनाधः ६ कर्कीधः ३ वृश्चिकाधः ३ एतत्सूनं ३ स्थानत्रयेस्थाप्यं मीनाधः ३ कर्कीधः ३ वृश्चिकाधः ३ अथत्रिकोणशोधनभेदोप्रथमशोधनेनैक्यम् ज्ञेयः द्वितीयप्रकारेतृतीयप्रकारेसर्ववत्त्रिकोणशोधनमेवकार्यइतित्रिकोणशोधनोदाहरणंसमाप्तं अथैकाधिपतिशोधनोदाहरणंलिष्यते एवंत्रिकोणंसंशोध्यपश्चादेकाधिपत्यतो क्षेत्रद्वयफलानिसुःतदासंशोध्यबुधिमान् १ क्षीणेनसहचान्यस्मि

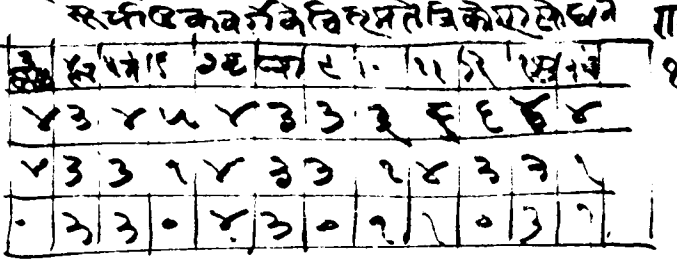

राम १०

नशोधयेत्तग्रहवर्जिते ग्रहयुक्तेफलेहीनेग्रहाभावेफलाधिके ऊनेनसहचान्यस्मिनशोधयेत्तग्रहवर्जित इति अस्यार्थःभोमादीनाक्षेत्रे द्वयमस्ति तत्रविचारः क्षेत्रद्वयेएकंग्रहयुक्तंफलःरेखाहीनंहीनंभवति द्वितीयंग्रहहीनंफलाधिकंभवति तदाऊनंफलंत्र्यन्यत्रग्रहहीनेधिकफलेक्षेत्रेशोध्यमितिभावःशोधावशिष्टंग्रहहीनेक्षेत्रेस्थाप्यं तद्यथा रवेरष्टकवर्गेमिथुनोग्रहसहितःत्रिकोणशोधनफलेनानेन १ हीनःकन्याग्रहरहितात्त्रिकोणशोधनफलेनानेना ४ धिकःतेनमिथनाधस्थितात्त्रिकोणशोधनऊनेन १ कन्यास्थिताधिकफलेशोधितेशेष ३ कन्याधःस्थापितं मिथुनाधःफलं १ कन्याधः फलं ३ एतत्सूर्याष्टवर्गेदृष्टव्यं केषांचिन्मतेन्सूनंफलंतत्स्थानद्वयेस्थाप्यं तेनमिथुनाधःफलं १ कन्याधःफलं १ एवंसर्वत्रबुद्धिमताप्रकारद्वयंज्ञातव्यं अन्यत्फलाधिकेग्रहयुक्तेचान्यस्मिन्सर्वमुत्सृजेदिति अस्यार्थःएकत्रशोधफलाधिकेग्रहयुक्तेअन्यत्रग्रहाभावेफलहीनेसतितदाफलाधिकेग्रहयुक्तेशोधनस्याधोयत्त्रिकोणफलंतत्स्थाप्यं अन्यत्रग्रहवर्जितःफलहीनेशोधसर्वमुत्सृजेदित्यत्रतत्स्याधःशून्यंस्थाप्यं तद्यथा कौश्चिन्मतेकेसूर्याष्टकवर्गेमिथुनोग्रहयुक्तेःफलाधिकः ४ कन्याग्रहरहितात्त्रिकोणशोधनफलहीनः १ तेनमिथुनाधोयथास्थितंस्थापितं ४ कन्याधःशून्यं ० एतत्कौश्चिन्मतेकेसूर्याष्टकवर्गेदृष्टव्यं तथाशुक्राष्टकवर्गेमिथुनोग्रहसहितःफलयुक्तः २ कन्याधःशून्यग्रहरहितःफलाहीनःतेनमिथुनाधोयथास्थितंफलंस्थापितं २

कन्याधोयथास्थितं शून्यंस्थापितं अन्यत् उभयोर्ग्रहसंयुक्तेनसंशोध्यःकदाचनेति अस्यार्थःउभयेक्षेत्रेग्रहसंयुक्तोसतितत्रशोधनंनकार्यं त
द्यथा बुधाष्टकवर्गेमेषोग्रहशहितः फलं १ वृश्चिकोपिग्रहसहितः फलं १ अत्रशोधनंनास्ति तेनमेषाधः १ वृश्चिकाधः १ स्थानद्वये
यथास्थितंफलंस्थापितं अन्यत् उभयोर्ग्रहहीनाभ्यांसमत्वेसकलंत्यजेदिति अस्यार्थः क्षेत्रद्वयेग्रहरहितेफलस्यसम्येसकलंत्यजेदि
तिस्थानद्वयेशून्यंस्थाप्यं तद्यथा चंद्राष्टकवर्गेधनमीनोग्रहंरहितौफलेनतुल्यौतेनस्थानद्वयेशून्यंस्थापितं धनाधः मीनाधः अ
थवाएकत्रफलंअन्यस्मिनशून्यंतदाफलाधःफलेशून्याधः शून्यंस्थाप्यंयदाएकत्रफलमधिकंअन्यत्रफलमूनंतदाफलाधःफ
लशून्याधःशून्यंस्थाप्यं यदाएकत्रफलमधिकंअन्यत्रफलमूनंदाऊनफलेनाधिकफलंशोध्यावशेषंस्थाप्यं तद्यथागुरोरष्टक
वर्गेधनमीनोग्रहरहितौधनाधः फलंमीनाधःफलं २ अत्रस्थानद्वयेयथास्थितंफलस्थापितंधनाधःमीनाधः २ तथाशनैरष्टक
वर्गेधनाधःफलं २मीनाधःफलं ५ उभोग्रहरहितौतेनधनाधः ऊनंफलंस्थापितं २मीनाधोऊनफलेनशोधितफलंस्थापितं
धनाधः २मीनाधः ३ इत्यत्राहरणद्वयंगुरोरष्टकवर्गशनेरष्टकवर्गेद्रष्टव्यं अन्यत्सग्रहाद्ग्रहतुल्यत्वात्सर्वंसंशोध्यमग्रहान्द्र
ष्टि अस्यार्थः यदैकोराशिर्ग्रहसहितः अन्योग्रहरहितः द्वयोःफलंतुल्यंभवतितदासग्रहेराशोयथास्थितंफलंस्थाप्यं ग्रहर

राम ११

हितेराशौशून्यंस्थाप्यं तद्यथा अत्रकल्पितोदाहरणे मिथुनेग्रहसहितस्तत्रस्थंफलंकन्याग्रहरहितस्तत्रस्थंफलं ३ अत्रफलतुल्यत्वात्सग्रह
मिथुनाधोयथास्थितफलंस्थापितं ३ अग्रहकन्याधःशून्यंस्थापितं अन्यत् कुलीरसिंहयोरास्योःएथकूक्षेत्रेएथकूफलं शोध्यावशिष्टं
संस्थाप्यराशिमानेनवर्द्धयेदिति अस्यार्थःकुलीरःकर्कराशिःएथकूक्षेत्रमिदंचंद्रस्यासिंहोराशिःएथकूक्षेत्रंसूर्यस्यैनकुलीरसिंहयोरा
श्योर्द्वित्रिकोनशोधनजंफलंतत्यथास्थितंस्थाप्यं सूर्याद्यष्टकवर्गेषुसर्वत्रद्रष्टव्यं इत्येकाधिपतिशोधनप्रकारः राशिमानेनवर्द्धयेत्
ग्रहयुक्तेपितद्राशौग्रहमानेनवर्द्धयेत्रादिति अस्यार्थः राशिमानेनववर्द्ध
येदिति अस्यार्थः राशिमानेनराशिगुणकेनएकाधिपतिशोधनफलानि
स्वस्वगुणकेनगुणयेत्तथाग्रहयुक्तेराशौतत्तद्राशिस्थफलानिस्वस्वग्रहमा
नेनगुणकेनगुणयेदित्यर्थः वर्द्धयेत्गुणयेत् उदाहरणार्थंरविष्टकवर्गन्या
सोलिखितः तत्रलेखनक्रमः आदौमिथुनाद्योराशयोलिखिताः ततएः
काधिपतिशोधनफलानि ततोराशिगुणकाः ततोगुणकैर्गुणितारााशेः शु

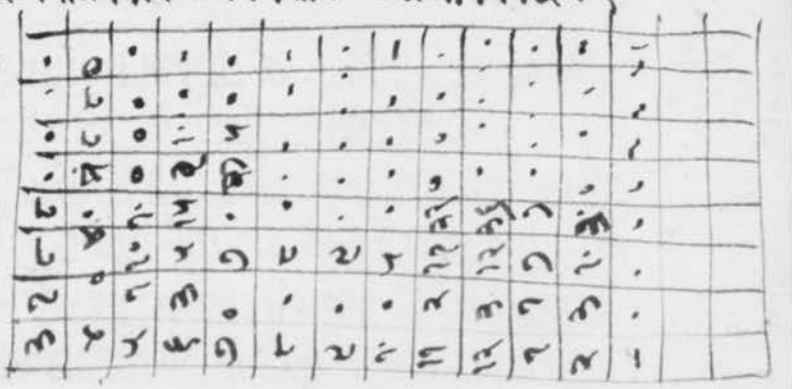

त्रैराशिकसिद्धानुवधपकुत्री
२८४२५८२५११२

सर्वंप्रेक्षवक्ष्य
५५८५१०१५

हो०प्र० १२

ङ्कफलानि ततोराशिस्थितग्रहाः ततोराशिगुणकाः ततोग्रहगुणकैर्गुणितानिग्रहयुक्तराशिस्थश्रुङ्कफलानि एवंक्रमःशोध्यावशिष्टं संस्थाप्यराशिमानेनवर्द्धयेत् ग्रहयुक्तेपितद्रासौग्रहमानेनवर्द्धतेति तथाराशिग्रहगुणकारैः फलानिगुणयेत्स्वकृ ग्रहयुक्तेस्वा नगुणयेत्ग्रहसंख्यागुणेसतेथेति अस्यार्थः शोध्यावशिष्टत्रिकोणशोधनेकाधिपतिशोधनफलंराशिगुणकैः स्वकृगुणयेत्तथा राशोग्रहयुक्तेसतितद्राशिस्थश्रुङ्कफलंग्रहगुणकैर्गुणयेदित्यर्थः अस्योदाहरणंसूर्याष्टकवर्गस्यस्वरेखालिखितंतत्तद्दृश्यं एवंगुणि त्वासंयोज्यसप्तभिर्गुणयेत्पुनः सप्तविंशोद्धृता २७ लब्धंवर्षाएकत्रभवंतिगिति अस्यार्थः एवंराशिगुणकैर्गुणितानिराशिस्थश्रुङ्कफलानि संयोयपेत्ेकीकृत्यतत्तराशिपिंडसंज्ञोभवति तद्राशिस्थश्रुधफलाभोलानिग्रहगुणकेनगुणितानितमेकीकृत्यग्रहपिंडसंज्ञोभवति राशिपिंडग्रहपिंडयोर्योगेयोगपिंडसंज्ञोभवति तद्यथा सूर्यो

सूवर्गोराशिगुणकैर्गुणितानांराशिस्थश्रुङ्कफलानांयोगोराशिपिंडः १२८

एवंराशिस्थश्रुङ्कफलानांग्रहगुणकैर्गुणितानांयोगोजातोरवेर्ग्रहपिंडः१

४० अनयोर्योगोजातोरवेर्योगपिंडः १६८ एवंचंद्रादीनांराशिपिंडग्रह

राम १२

पिंडयोगपिंडाःसाधितास्तेष्वुदाहरणेलिखिताःबुद्धिमद्भिर्दृश्याः तथाचसप्तभिर्गुणयेत्पुनःसप्तविंशोद्धृता २७ लब्धंवर्षाएकत्रभवंति हि द्वादशादिगुणे १२ ३०।६० लब्धाम्हसाहर्यटिकाःस्युरितिअस्योदाहरणं तत्रखेर्योगपिंडः १६८ सप्तभिर्गुणितः ११७६ स प्तविंशति २७ भक्तेलब्धंवर्षाणि ४३ शेषं १५ द्वादश १२ गुणितं १८० सप्तविंशतिभक्तेलब्धमासाः ६ शेषं १८ त्रिंशत् ३० गुणि तं ५४० सप्तविंशतिभक्तेलब्धंदिवसाः २० शेषं० षष्टिगुणितं सप्तविंशतिभक्तेलब्धंघटिका० पलानि० एवंजातोरवेर्मध्यमायुः ४३ ६ २० ० ० वर्षादिःएवंचंद्रादीनामप्ययुसाध्यं सप्तविंशतिवर्षाणिमंडलंपरिकीर्तितं तद्दृङ्मितिभिः ५४ शोध्यंत्यजेत्तद्भमी ५४ तद्दृङ्मितेकुजा ८१ थिकेभवेद्यत्रमंडला १०८ तच्छोधयेत्ततः इति अस्यार्थः अत्रमंडलप्रमाणंसप्तविंशतिर्वर्षाणि २७ मंडलादून

ग्रहविशेषाणां मंडलभुक्तायुर्दशाः

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ५८ | ५३ | ४७ | ६२ | २१ | ४१ | ३५ | ३८ |
| ६ | ८ | ९ | ३ | ९ | ५ | ०० | ४ |
| २० | २६ | २३ | ६ | २० | २३ | ०० | ३६ |
| ०० | ४० | २० | ४० | ० | २० | ०० | २० |

मंडलभुक्तेरव्यादीनामायुः

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २० | २६ | ३ | ७ | २१ | १२ | १२ | १४ |
| ६ | ३ | ५ | ३ | ९ | ६ | ० | ७ |
| २३ | २३ | २३ | ६० | २० | ६ | ० | २३ |

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | रा | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २८ | १३ | १७ | १६० | ६४ | ८२ | ५४ | ८१ | राशि |
| ४० | ५४ | ३६ | ७६ | २० | ६८ | ३१ | ७ | शक्ति |
| २६ | ७ | २२३ | २३६ | ८४ | १६० | १३५ | १५४ | दो |

मायुर्यथ्यागतंस्थाप्यं मंडलादधिकेभ्रमिभिः ५४ चतुःपंचाशद्भि ५६ शोध्यंभ्रमे ५४ राधिकेचतुःपंचाशदाधिकेभ्रमिं ५४ त्यजेत्चतुःपंचशत् शोध्याःकुजाधिके ८१ एकाशीत्याधिकेमंडलात् १० ८ अशीतरशतमध्येशोध्याःशेषंमंडलभुद्भायुः स्यात्तथा रवेरायुः ४३ ६ २० ० मंडलाधिकत्वात्भ्रमिभिः ५४ भुद्भोजातोमंडलभुद्भायुः १० ५ १० ० ० अथचंद्रायुः २६ २ ३ २७ ८ २६ ४० इदमपिमंडलाधिकत्वात्भ्रमिभिः ५४ भुद्भाशेषमायुः २६ ३ ३ २० अथभौमायुः ५७ ९ २२ २० ० भ्रमेराधिकत्वात् ५४ भ्रमिः ५४ भुद्भाशेषमायुः ३ ९ २३ २० ० अथबुधायुः ६१ १ ६ ४० ० इदमपिभ्रमै ५४ धिकत्वात्भ्रमिभिः ५४ भुद्भाशेषमायुः ७ २६ ४० अथगुरोरायुः २१ ९ १० ० मंडला २७ दूनत्वाद्यथास्थितंमेवायुः २१ ९ १० + ० अथशुक्रायुः ४१ ५ २३ २० मंडला २७ धिकत्वाद्भ्रमिभि ५४ भुद्भः १२ ६ ४० अथशनेरायुः ३५ ० ० ० भ्रमिभिःभुद्भः १९।०।०।०।० अथलग्नायुः ३९ ४ २६ ४० ० भ्रमिभिः ५४ भुद्भः १४ ७ ३ २० इतिमंडलभुद्भायुः अथहानिसंस्कारमाह अन्योन्याद्ईहरणंग्रहयुक्तेनुकारयेत् नोचेद्ईमस्तगोप्यद्ईहरणंतेषुकारयेत्शत्रु क्षेत्रेत्रिभागोनंदर्शोगहरणंतथा रणभंगेतुसंशोनमर्कद्वोःपातसंश्रयात् वक्रत्वहरणेप्राप्तेकारयेद्बलवतरोद्इति अन्योन्याद्ईहरणमितिद्विध्या दयोग्रहोरकराशिस्थिताःभवंतितदातेषामन्योन्यंपरस्परमायुषोद्ईसर्वेषांकार्यमितिभावः तथापीग्रहोनीचराशिस्थितोभवतितस्याप्या

राम १३

युषोद्ईकार्यं यदाशत्रुक्षेत्रस्थितोभवतितदातस्यापुरुत्वंशोनंकार्यं दशपांगहरणानघेति दशपंगमितिलग्नोदितभागाद्यमंद्वादशैकादशदशमनव माष्टसमाबतुल्यांशपर्यंतंदशपांगसंज्ञकं तत्रस्थितांशग्रहणंशोधयित्वाहानिःकार्यं साचत्राद्ईहानिरित्युच्यते उक्तंचपूर्वायुर्दायाध्याये व्यपतोत्रवामं सर्वाद्ईकत्रिकचतुर्थशरर्तुभागानुक्त्वाहरत्यशुभदाः शुभदाप्तदद्ईमितिव्यवस्थितः क्रूरग्रहःयदागतमायुःतत्सर्वंहरति शुभोद्ईहरति तथैकादशस्थःक्रूरोद्ईहरति अष्टमस्थः पंचमांशं सप्तमस्थः क्रूरोद्ईहरति दशमस्थस्तृतीयांशंहरति नवमस्थश्चतुर्थांशंहरति अष्टमस्थः पंचमांशं सप्तमस्थःषष्ठांशमिति एतेषुस्थानेषुशुभग्रहाः अर्द्धहरंतितथाच एकस्थानस्थितास्त्वेत्यर्द्धादयोपत्रवेचराः तदाबलयुतःखेटोहरत्येवनचापरइति ब्रह्मयामले वक्रत्वहरणेप्राप्तेकारयेत्बलवत्तरमिति एकस्यग्रहस्यएकराशिस्थितस्यदशपांगास्थितस्यनीचादीस्थितस्याद्ध्यादिहरणे प्राप्तेबलवत्तरमित्याधिकहरणंकार्यं अत्रोदाहरणंतत्रबेर्मंडलभुद्भायुः १०। ५। १०। ० अत्रबिबुधयुक्तत्वेनास्याद्ईहरणंप्राप्तंतथाद्वादशस्थः स्वेनसर्वहरणंप्राप्तं हरणद्वयेप्राप्तेसर्वहरणमधिकमस्ति तेनास्यसर्वहरणंप्राप्तंकृत्वातंजातंवेहानिसंस्कृतायुः ० ० ० ० तथाबुधस्यमंडलभुद्भा यु ७ २ ६ ४० ० अत्रबुधोरवियुक्तत्वेनाप्यस्याद्ईहरणंप्राप्तंतथाद्वादशस्थः शुभग्रहत्वेनाप्यद्ईहरणंप्राप्तं एवंहरणद्वयेनतुल्यंप्राप्तेएकमेवह रणंकृतंजातंबुधस्यहानिसंस्कृतायुः ३ ७ ३ २० ० अत्रेंचंद्रस्यमंडलभुद्भायुः २६ ३ ३ २० ० चंद्रस्यान्याहानिर्नास्ति एकादशस्थितत्वा त्चतुर्थांशहानिःप्राप्त आयुश्चतुर्थांशः ६ ६ २३ २० अनेनोनंजातंचंद्रस्यहानिसंस्कृतायुः १९ ८ १० ० अथशुक्रस्यमंडलभुद्भायुः

१२।६।६।४०।० शुक्रः शत्रुक्षेत्रेऽस्ति अतोऽर्धांशोनहरणं प्राप्तं तथादशमस्थः सन्नष्टांशहानिः प्राप्ता द्वयोर्हरणेऽर्धांशोनहरणमधिकं अतोऽर्धांशो नेक्षातं अयुक्तार्धांशः ४ २ २ १३ २० अनेनोनैर्जातंशुक्रस्यहानिसंस्कृतायुः ८ ४ ४ २६ ४ अथगुरोर्मंडलशुद्धायुः २१ ९ १० ० गुरुः शत्रुगृहेऽस्ति अतोऽस्यार्धांशः ७ ३ ३ २० अनेनोनैर्जातंगुरोर्हानिसंस्कृतायुः १४ ६ ६ ४० ० अथभौमस्यमंडलशुद्धायुः ३ ९ २३ २० अस्यहरणाभावाद्यथास्थितमेवायुः ३ ९ २३ २० अथशनेर्मांडलशुद्धायुः १९ ० ० ० अत्रापिहरणाभावाद्यथास्थितमे वशनेरायुः लग्नायुषः हानिसंस्काराभावाद्यथास्थितमेवायुः १४ ७ ३ २० इतिहानिसंस्कारोदाहरणं पश्चान्नासकलान् कृत्वावारा गेन ३२४ विवर्द्धनं मातंग ३६५ लब्धशुद्धायुर्भवतीतिनसंशयः पूर्ववदिनमासाद्यंकृत्वानयदशाभवेत् एवग्रहाणांसर्वेषांदशांकुर्यात्तत् पृथक्पृथक्कृति पश्चान्नासकलान्वरांगेनचतुर्विंशत्याधिकशतत्रयेनविभजेत् ३६५ दित्यर्थः पलब्धंतत्शुद्धायुर्भवति तत्सर्वग्रहाणांदशाविभागः पूर्ववदिनमासाद्यमितिस्वस्वगणेदिनमासाद्यंकृत्वाएवंसर्वेषांग्रहाणांपृथग्पृथक्दशाविभागायुर्भवति अत्रोदाहरणं अत्ररवेरायुः ०० ०० तथाचन्द्रस्यायुः १९ ८ १० ० ० वरांगेन ३२४ गुणितंजातं ६३८१ मातंग भक्ते लब्धं ३६५ लब्धंवर्षाणि १७ शेषं १७ ई द्वादशगुणितं २११२ मातंगभक्तेलब्धंमासाः ५ शेषं २७ त्रिंशत् ३० गुणितं ८६१० मातंगभक्तेलब्धंदिवसाः २३ शेषं २१५ षष्ट्यागुणितं १२९०० मातंगभक्तेलब्धंघटिका ३५ शेषं १२५ षष्टया ६० गुणितं ७५०० मातंगभक्तेलब्धं पलानि २० इतिजातंचंद्रस्यापूर्ववर्षादिः १७ ५ २३ ३५ २० एवंभौमादीनांदशादिभागायुःसाध्ये यस्ययदागतमा युत्तद्देवतस्यदशामानंकथितं अष्टवर्गदशाभागाः सर्वेषामुत्तमोत्तमइति अथमित्रायुषीलग्नायुस्यस्फीकरणं राशितुल्यानिपदछेत्युदंयस्यच शेषा न्मासादिनाद्यं चलग्नादायुर्वानिर्दिशेदिति अत्रभिन्नापूर्वियदागतंलग्नंतस्यशुद्धायुत्तत्राशितुल्यानिवर्षाणिवर्षस्थानेयोजयेत् अशादिका त् १ त्रैराशिकानुपातेनमासादिनाद्यंफलंगृहीत्वामासादिकेयोजयेत् तत्तल्लग्नायुः स्फुटंभवति अत्रोदाहरणं सर्वसाधितलग्नस्यशुद्धायुः १२ ११ १३ १३ ५८ स्पष्टं लग्नं ३ ८ ४५ ० अत्रराशितुल्यानिवर्षाणिवर्षस्थानेयोजितानिवर्षाणि १५ शेषं ८ ४५।० अत्रानुपातःयदिराशेस्त्रिंशद्दंशैर्द्वादशमासाल्लभ्यंतेतदाशेषांशैः किमितिशेषांः शादिकंगुणकः त्रिंशत् ३० भाजकः गुणकेनगुणितेगुण्येअथवागुण्येनगुणितेगुणको नुल्यमेवभवति अतोद्वादशमासागुणकः कृतः १२ त्रिंशद्भाजकः ३० गणकभाजकोध

ग्रहाणां दशाविभागायुः स्पष्टः

| र | चं | मं | बु | गु | शु | श | ल | ए |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १७ | ३ | ३ | १२ | ७ | १६ | १२ | वर्ष |
| ० | ५ | ४ | २ | १० | ४ | १० | ११ | मास |
| ० | २३ | १९ | ८ | १९ | २६ | ११ | १३ | दिन |
| ० | ३५ | ४ | ३ | ३३ | ५७ | ४३ | १३ | घटी |
| | २० | ६ | १० | ४२ | ३२ | १६ | ५८ | पल |
| | ० | ० | ० | ० | ० | ८ | | |

ग्रहाणां दशाविभागायुः स्पष्टः

| र | चं | मं | बु | गु | शु | श | ल |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २९ | ३ | ७ | १४ | ८ | १९ | १४ |
| ० | २० | २ | ३ | ८ | ४ | १० | ७ |
| ० | २५ | २ | ० | ६ | ४ | ० | २० |
| ० | ० | ० | ० | ४० | ० | ० | ० |

ङ्गिरपवर्त्तिनौजातगुणकस्थानेरभाजकस्थाने ५ अतःशेषोशादिकंद्वाभ्यांसंगुण्यपंचभिर्विभज्यतल्लभ्यतेमासादिफलंतन्मासादिस्थाने
योज्यमितित्र्यंशादिशेषं ८ ४५ १० द्वाभ्यांगुणितं १७ ३० ० पंचभि ५ र्भक्तेलब्धंमासाः ३ मासशेषं २ ३० ० त्रिंशत् ३० गुणितं ७५ ०
पंचभिर्भक्तेलब्धंदिवसाः १५ शेषं० घटिका० पलानि०लब्धमिदंमासहीनादिस्थानेयोजितंजातंलग्नस्यशुद्धायुः १६ २ २८ १३ ५८ एतदेव
दशामानं अथरव्यादीनांस्पष्टसलग्नकानांदशादिभागायुःकोष्ठकानांन्यासोयंश्रीतिव्रलयःमले ऽष्टकवर्गजातकोभिन्नाष्टकवर्गायुसा
धनाध्यायः अथसमुदायाष्टकवर्गायुः अष्टवर्गःसमुद्धृत्यग्रहाणांराशिमंडलेएकस्मिन्मंडलाधिक्येशोधयेच्चक्रमंडलं द्वादशादेतु
गृह्णीयादेवंसर्वेषुराशिष्विति अस्यार्थः मेषादिराशिमंडलेरव्यादिग्रहाणांसलग्नकानांरे
खयोगःकार्यःमंडलाधिक्येद्वादशाधिक्ये १२ मंडलंसंशोध्यमेषादिराशिमंडलेस्थापयेत्

| सू | चं | मं | बु | बृ | शु | श | ल | यो |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | २७ | ३ | ३ | १२ | ७ | १६ | १६ | ७७ |
| ० | ५ | ४ | २ | १० | ४ | १० | २ | ५ |
| ० | २३ | १६ | ८ | १६ | २६ | ११ | १८ | १७ |
| ० | ३५ | ४ | ३ | ३२ | ५७ | ४० | १३ | ८ |
| ० | २० | ८० | १७ | ४२ | ३२ | १६ | ५८ | ११ |

राम
१५

नद्यथा रवेरष्टकवर्गे ५ शुक्राष्टकवर्गे ५ शनेरष्टमेषेरेव ४ चंद्राष्टकवर्गेमेषे ६ एवंभौ
माष्टकवर्गे ३ बुधाष्टकवर्गे ५ गुरोरष्टकवर्गे ५ शुक्राष्टकवर्गे ५ शनेरष्टकवर्गे ४ लग्नाष्टक
वर्गेमेषेरेखा ६ एवंसर्वग्रहाणांरेखेक्यंमेषरासौस्थापितंरेखा ३८ इयंमंडलशुद्धाशेषं २

मेघाधःस्थापित २ एवंवृषादिराशौसर्वग्रहाणांरेखैक्यंकृतंवृषादिराशौस्थापितंतत्तदृश्यं मेषादिलग्नेग्रहाणांरेखैक्यसंख्यावशाद्विद्याहादिका
र्येशुभाशुभमग्रेव तथाचाग्रकत्रिकोणसंशोध्यपश्चादेकाधिपत्यता र्वेक्यगुणकारेश्चवर्ग्ययेष्टयकूष्टयकूएकीकृत्यतुलसर्वसमभि
७ गुणयेत्पुनः सप्तविंशतिभिर्लब्ध २७ मायुपिंडप्रदृश्यते द्वादशादिगुणे १२ ३० ६० र्लब्धामासाहर्यदीकाम्मताइतिअस्यार्थः आदौ

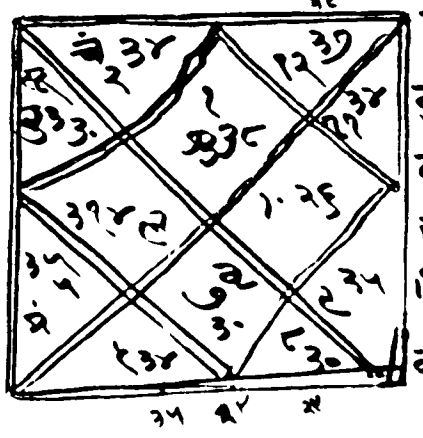

मेषादिराशिमं
डलेसर्वग्रहाणां
यत्ररेखैक्यं व
र्तेतत्रादौप्रश्न
त्रिकोणशोधने

| अथमंडलशुद्धानांसमुदायाष्टकवर्गः रेखानांन्यासः श्रीराम | | | | | | | | | | | | | ० |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| शु | चं | सू | ल | मं | ० | बृ | श | ० | ० | ० | ० | ० | ग्रह |
| १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | १० | ११ | १२ | ० | राशि |
| २ | १० | ६ | ७ | १ | १० | ६ | ६ | १ | २ | १० | १ | ० | रे |
| १ | ८ | ० | ६ | ० | ८ | ० | ५ | ० | ० | ४ | ० | ० | त्रि |
| १ | ८ | ० | ६ | ० | ८ | ० | ५ | ० | ० | ४ | ० | ० | ए |

रत्वाष्टकैतत्रराशिगुणकारेश्चवर्ग्ययेष्टयकूष्टगुणकेगुणयेत्पुनरेकीकृत्य

राशिपिंडग्रहपिंडौभवतः द्वयोर्योगेयोगपिंडसंज्ञःस्यात् सयोगपिंडःसप्तभिःसंगुण्यसप्तविंशतिभि २७ र्विभज्यपलंलभ्यतेतद्वर्षाणि द्वादशगुणितेर्लब्धाश्चतिवर्षशेषंद्वादशभिःसंगुण्य मासशेषंत्रिंशद्भिः हिनशेषंषष्ट्यासंगुण्यसप्तविंशतिर्भजनात्पलंलभ्यतेतन्माधंकृलंभवति शतादूर्ध्वंतुनसिंडमंडलं १०० शोधयेत्तनः शतमेकंतुगृहीत्वाद्वीर्घायुयोगसंभवमिति अस्यार्थः सप्तविंशतिर्भजनात्प्रथमंवर्षस्थाने वर्षपिंडः शताधिकोभवतितदातन्मध्येतदातन्मध्यमंडलं १०० शतंविशोध्यशेषंसमुदायुः स्यात् यदाशतमेकंलभ्यतेनदादीर्घायुसंभवंशतमेकंग्राह्यमित्यर्थः अत्रोदाहरणं सर्वोक्तराशिगुणकैर्गुणितानिराशिस्थत्रिकोणे काधियतिशोधनफलानिएकीकृतानिजातोराशिपिंडः २३५ एवंग्रहगुणकारैर्गुणितः २१४९ सप्तविंशतिभक्तेलब्धंवर्षाणि शेषं १९ द्वादश १२ गुणितंसप्तविंशतिभक्तेलब्धंमासाः ७ शेषं ३ त्रिंशत् ३० गुणितं ९० सप्तविंशतिभक्तेलब्धदिवसाः ३ शेषं ९ षष्ट्या ६० गुणितंभक्तंघटिका २० एवंजातःसमुदायुर्वर्षादिर्मध्यमः ७९ ७ ३ २० ० अथस्पष्टीकरणं तद्विधंसकलंकृत्वावारांगेण ३२४ विवर्द्धितं मातंग ३६५ लब्धंद्वायुःसमुदायंचदृश्यतइतिद्वेधंसकलंकृत्वेसमुदायुः ७९ ७ ३ २० ० विरांगेनविवर्द्धितो ३२४ जातः २५७८८ मातंग

| रा० | बु | चं | कु | ल | मं | ☉ | शु | श | ह | १० | ११ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| एको | १ | २ | ३ | ४ | ५ | ६ | ७ | ८ | ९ | ० | ४ |
| रा० | ७ | १० | २० | ४ | १० | ५ | ७ | ८ | ० | ५ | ११ |
| गु० | ७ | २५ | ५१ | २५ | ८ | ४० | १० | ५ | ० | ० | ४४ |
| गु० गु० | | | | | | | | | | | |

भक्तेलब्धंवर्षाणि ७० वर्षशेषं २३८ द्वादशगुणितं २८५६ मातंग ३६५ भक्तेलब्धंमासाः ७ शेषं ३० १ त्रिंशद्गुणितं ९० ३० मातंगभक्तेलब्धंदिवसाः २४ शेषं २७० षष्ट्यागुणितं १६२०० मातंगभक्तेलब्धंघटिकाः ४४ शेष १५६ षष्ट्यागुणितं ८४०० मातंगभक्तेलब्धंपलानि २३ शेषं ५ एवंस्पष्टायुः ७०।७।२४।४४।२३ सर्वेषामेवमुक्तेषुनाभिन्नग्रहेभ्यःशुद्धेभ्यःपिंडरूपविनिर्दिशेदिति इदंसामुदायुःसर्वग्रहाणांपिंडंज्ञातव्यं ग्रहाणांतुविभागार्थमुपायःकथ्यतेधुनाभिन्नाष्टवर्गजायुश्चस्वस्वेष्टसंगुणःसामुदयेनभिन्नायुर्योगाप्तंस्वदशाभवेदिति अस्यार्थः अथग्रहाणांदशाविभागार्थमुपायःकथ्यते सामुदायुषेनस्वस्वग्रहाणांभिन्नायुर्गुणयेत् सर्वग्रहाणांभिन्नायुर्योगेनविभजेत् पलंभवेत्तत्स्वस्वग्रहाणांदशाविभागायुर्भवति अत्रत्रैराशिकंयदिभिन्नाष्टकवर्गायुर्योगेनग्रहाणांस्वस्वभिन्नायुर्लभ्यतेतदासामुदायुषेनकिमिति समुदायुर्गुणकःस्वस्वग्रहाणांभिन्नयुर्गुण्यः भिन्नाष्टकवर्गायुर्योगोहारइत्युपपन्नं अत्रोदाहरणं चंद्रस्यभिन्नपुर्वर्षादिः १७५ २३ ३५ २० सामुदायुषेनानेन ७० ७ २४ ४४ २३ गोमत्रिकान्यायेनगुणितोजातोभाज्यः १२ ३५ ११ ११ ४६ २४ भिन्नायुर्योगोयं ७७ ५।१७ ८ ११ भाजकः सवर्णितोभाज्यभाजको भाज्यः १६०४९४३८४ भाजकः १००३९३६९१ भाजकेनभक्तोभाज्येलब्धंवर्षाणि १५ शेषं।

राम १६

१२ ० १२ ०

होप्र० १७

नेष्टवर्षाः शेषसमुदायघातेन गुणितानांस्वस्वभिन्नायुर्घातानांस्ववर्गितानां

| पं | बु | व | शु | र | ल | चं | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| २४२ | २२५ | २१० | ५२३ | ११८१ | १७७ | १३४ | |
| ३ | २ | २ | २ | २ | ७ | ११ | |
| १ | २३ | २ | २३ | २८ | २० | ११ | |
| ० | ५२ | ४ | १६ | २२ | २६ | ४६ | |
| ३७ | १० | ० | ४ | ४ | ३३ | २४ | |

चंद्रभाज्यहारौ | चंद्रभाज्यहारौ
१६००४९४३८४ | ३१०७१६२७
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

भौमभाज्यहारौ | भौमभाज्यहारौ
३१०७१६२७ | ३१०७१६२७
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

बुधभाज्यहारौ | बुधभाज्यहारौ
२१२५८५८४० | २१२५८५८४०
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

गुरोर्भाज्यहारौ | गुरोर्भाज्यहारौ
११२५८५८४० | ११२५८५८४०
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

शुक्रभाज्यहारौ | शुक्रभाज्यहारौ
६८२०८०८ | ६८२०८०८
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

शनेर्भाज्यहारौ | शनेर्भाज्यहारौ
१५३८५४१६२ | १५३८५४१६२
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

राहुभाज्यहारौ | राहुभाज्यहारौ
१४७३४२५९३ | १४७३४२५९३
१००३९३६९१ | १००३९३६९१

DR BHAU DAJI MEMORIAL INSTITUTE

राम १७

९४५८९०१९ द्वादशागुणितं ११३५०६८२२८ भौजकेनभक्तोलब्धंमासाः ११ शेषं ३० ७३०६२७ त्रिंशद्गुणितं ९२२१२८८१० भाजकेनभक्तेलब्धंदिवसाः ९ शेषं १८५८५५९१ षष्ट्यागुणितं ६४८२९१५४० भाजकेनभक्तेलब्धेपलानि ६ शेषं ४५९३९३९४ एवंचेदस्यसमुदायुषेजातंदशाद्विभागायुर्वर्षादिः १५ ११ ९ ११ ६ एवंभौमादीनांसमुदायायुर्विदशाद्विभागायुः साध्यः अत्रेष्टसमुदायुषेनस्वस्वभिन्नायुर्गुणितानांन्यासकोष्ठकाइमेइष्ट्याः इष्टा नांन्यासः तथाच एवंग्रहाणांसर्वेषांदशायुश्चष्टचक्रेष्टधक्रे समुदायदशामार्गेत्येवंकर्मसमीरितः अष्टवर्गदशामार्गः सर्वेषामुत्तमोत्तमः इतिस्पष्टार्थं इतिद्विविधमायुःसाधनंसमाप्तं अत्रयोगांतरं दिन २ घटि ११ पल २८ स्वल्पांतरत्वाददोषः अथभिन्नायुर्व्यवस्था नकेंद्रगेंदोर्बलसंयुतेऽन्यैःसकेंद्रकस्थैः रवियोगयुक्तैः भिन्नाष्टवर्गेणदशायुर्यंस्यादतोन्यथाचेत्समुदायकेपि १ केंद्रादन्यतर

| रा | चं | पं | बु | व | शु | र | ल | गु | शु |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ० | १५ | ३ | ०२ | ११ | ६ | २५ | १४ | ३० | ३० |
| ० | ११ | १ | १० | ०८ | ६ | ४ | ९ | ७ | ७ |
| ० | २ | १ | २६ | २८ | २ | १६ | २३ | २६ | २४ |
| ० | ११ | ५२ | ४३ | ५० | ३६ | ४ | २५ | ४५ | ४८ |
| | ६ | ४८ | ३४ | ४४ | ५३ | ४८ | ७ | ५७ | २३ |

स्थेचशशिनिग्रहसंयुते अष्टवर्गेणाभिन्नायुःदशमस्थैःशुभाशुभैः जन्मजन्मलग्नेचंद्रः केंद्रस्थोनभवति अन्येग्रहाःकेंद्रस्थाःसवीर्याःभवंतिन दातस्याभिन्नाष्टवर्गायुःसाध्यइत्यर्थः अथसामुदायुर्व्यवस्था ग्रहान्वितेशीतकरेसकेंद्रेयदान्यखेटैर्विबलैरकेंद्रैः क्रमात्खगेशात्समुदायमार्ग विनिर्दिशेज्ज्ञातककौशलज्ञः ग्रहसहितेकेंद्रस्थेचंद्रेकेंद्राद्बहिःस्थितैः शेषैःसमुदायाष्टकवर्गविधिनाग्रहदायंचिंतयेन्मणित्थाक्तिः २ जन्म लग्नेग्रहसहितश्चंद्रः केंद्रस्थःसवीर्योभवति अन्येग्रहाःअकेंद्रस्थाःकेंद्ररहिताःहीनवीर्याःभवंतितदातस्यसामुदायाष्टकवर्गेणायुः सा ध्यइत्यर्थः यदाचंद्रः केंद्रस्थोऽधिवीर्योभवति अन्येग्रहाश्चकेंद्रस्थाःसवीर्याःभवंतितदाभिन्नायुःसामुदायिकयोगाद्भिन्नायुःसाध्यं तत्रपू र्वोक्तरीत्यादशाविभागायुःसाध्यंयदाचंद्रः केंद्रस्थोनभवति अन्येग्रहाःकेंद्रस्थानभवंति तदाचंद्रान्यग्रहयोमध्येयोधिवीर्योभवतितदात स्यायुसाध्यंचंद्रःसवीर्यश्चेत्सामुदायुःसाध्यं अन्येग्रहाःसवीर्याश्चेत्भिन्नायुःसाध्यं दशाविभागायुः पूर्वोक्तप्रकारेणैव इतिसामुदायुः व्यवस्था विद्वद्गम्येखेटज्ञीलाविलासेसम्यग्बोधेपुंजराजोदितेच होरासारेशुभहोराप्रकाशेपूर्णस्त्वासीदष्टवर्गापुरत्र आयुर्दायाध्यायः समाप्तः अथदशाध्यायः यदायुर्यस्यखेटस्यतत्तस्यैवदशाभवेत् यद्यप्याशास्त्रप्रकारेणप्रवक्ष्यामिसमासतः १ लग्नेंदूर्कानांचयोवीर्ययु क्तस्तेषेयार्वाद्यादशाबुधिमाद्यैः तस्मात्केंद्रादिस्थितानामनल्पाश्चेदेकस्थावीर्ययुक्तक्रमेण २ अस्यार्थः लग्नचंद्रसूर्याणामः धेयोवयोवलीतस्यअद्याप्रथमादशाज्ञेया तस्मात्केंद्रादिस्थितानांकेंद्रप्रणपरआपो यक्ष्किमस्थानांदशायथाक्रमेणज्ञेया चेदेकस्था

एम १८

एकस्थानेद्दिआदयोग्रहाःसंतितदावीर्ययुक्तक्रमेणयोवीर्यवान्सःप्रथमःतस्माद्धीनवीर्यस्तदनंतरं तस्माद्धीनवीर्यइति क्रमेणदशासाध्या अ त्रोदाहरणंखेवेल्लिमधिक अतोरवेर्दशाप्रथमा अस्मात्केंद्रस्थोबुधोभवतितेनाग्रेबुधदशा षड्डूलमिदं १० १ ३५ चंद्रस्यषड्डूलं ५ ३० लग्नस्यषड्डूलं ६ ४ ८ एषारवेर्बलमधिक अतोरवेर्दशाप्रथमा अस्मात्केंद्रस्थोबुधोभवतितेनाग्रेबुधदशा रवेःफलंफलंस्थाःगुरुशु क्रलग्नानांयथाक्रमंबलोनास्तेषांयथाक्रमेणदशालिखित तथाशनिभौमचंद्रायथोत्तरंबलहीनाअतोयथाक्रमेणालिखिताः तथाचोय

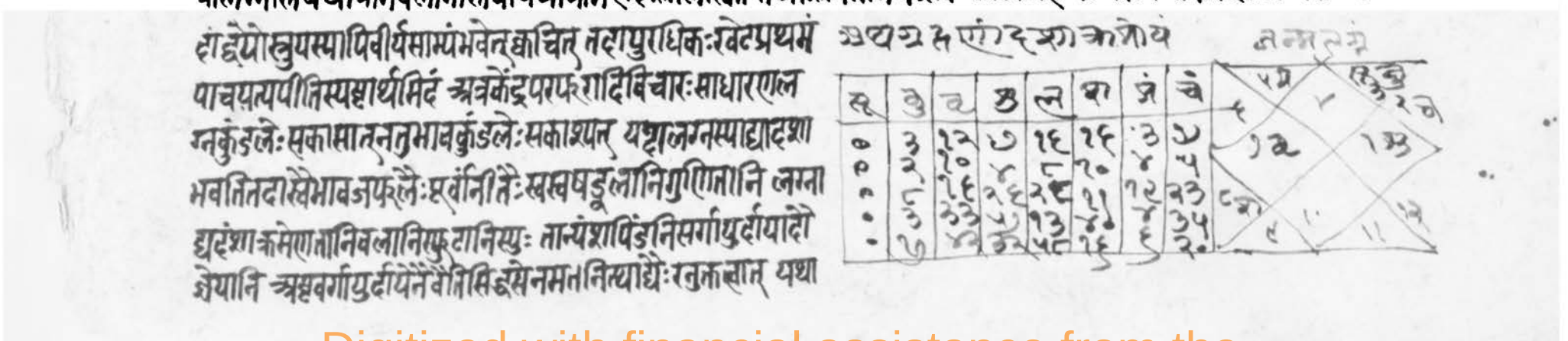


द्वाद्वेयोस्तुयस्यापिवीर्यसाम्यंभवेत्क्वचित् तदापुराधिकःरवेःप्रथमं पाचयत्यपीतिस्यस्यार्थमिदं अत्रकेंद्रपरफलादिविचारःसाधारणल ग्नकुंडलेःसकाशात्तनुभावकुंडलेःसकाशात् यस्माज्जन्मलग्नाद्यादशा भवतितदास्वेभावजफलैःपूर्वनिर्दितैःस्वस्वषड्डूलानिगुणितानि जन्मा द्यदशाक्रमेणतानिबलानिस्फुटानिस्युः तान्यंशापिंडनिसर्गायुर्दायादो ज्ञेयानि अष्टवर्गायुर्दायेनवैतेसिद्धयेनमतनित्याद्यैःरनुक्तात् यथा

Digitized with financial assistance from the
Government of Maharashtra
on 11 June, 2017

गणितागतमेवषड्लंगृह्यं अथांतर्दशा एकस्मैर्दृग्मंशकंवैत्रिकोणेऽनेद्रं ७ शंयाचयत्येवरवेटः स्फुर्यशिरंध्रंधुस्फुर्योश्चचेदेक
स्मैंद्वादयोवबलीसः मूलदशापतेः एकस्मैंएकराशिगेमूलदशायान्यैर्दृग्मयफलाभवतित्रिकोणेनवपंचमेऽंशकस्य ३ फला
स्यात् अतःधूनेःसमगस्थानेऽद्रं ७ शंसामांशकस्यफलास्यात् रंध्रंधुस्थस्यचतुर्थीष्टमगस्य अष्टमांशफलास्यात्